

वार्तालाप – 418, जम्मू, ता – 13.10.07  
Disc.CD No.418, dated 13.10.07 at Jammu

समय – 10.29

जिज्ञासू – बाबा, वाणी में आया है – ब्राह्मण वो जो रचयिता और रचना को जानता हो। तो ब्रह्मा बाबा ने तो रचयिता को नहीं जाना।

बाबा – नहीं जाना; इसलिए तो पढ़ाई पढ़ रहे हैं। ब्रह्मा अर्थात् कृष्ण की सोल इस समय पढ़ाई पढ़ रही है या पढ़ा रही है?

जिज्ञासू – पढ़ रही है।

Time:10.29

**Student:** Baba, it has been mentioned in a *vani*, He who knows the creator and the creation is a Brahmin. But Brahma Baba did not know the Creator.

**Baba:** He did not know; that is why he is studying knowledge. Is Brahma, i.e. the soul of Krishna studying knowledge at present or is he teaching?

**Student:** He is studying.

बाबा – अभी भी कृष्ण की सोल पढ़ाई पढ़ रही है। वो अभी भी बच्चा बुद्धि है; क्योंकि अभी भी उनकी बुद्धि में ये बात नहीं बैठी है कि गीता का भगवान साकार में कौन होता है? वो साकार में गीता का भगवान किसको समझते हैं? शिवोऽहम्। तो दुनियाँ का बड़े ते बड़ा शिवोऽहम् कौन हुआ? जो भक्तिमार्ग में और अपन को शिवोऽहम् कहने वाले हैं वो इतने बड़े शिवोऽहम् नहीं है; लेकिन उनका भी बड़े ते बड़ा शिवोऽहम् जो शिवोऽहम् का फाउन्डेशन डालता है वो स्वयं ब्रह्मा है। अभी भी है। चोला छूट गया है तो कोई दूसरे निमित्त चोले में प्रवेश करके पार्ट बजाता है। पुरुष तन छूट गया ब्रह्मा का, वो नहीं पूजा जाता। कब पूजा जाता है? जब कोई स्त्री चोले में प्रवेश करता है। तब पूजा जाता है। तो जिस भी स्त्री चोले में प्रवेश करके जगदम्बा का पार्ट बजाता है ब्रह्मा कहो, जगदम्बा कहो बात तो एक ही है। उस चोले के द्वारा वो गीता का भगवान किसको समझता है?

जिज्ञासू – अपने को।

**Baba:** Even now the soul of Krishna is studying knowledge. He still has a child-like intellect because even now it has not fitted in his intellect, who the God of the Gita in corporeal form is. Whom does he consider as the God of the Gita in a corporeal form? *Shivoham* (I am Shiv). So, who is the biggest *Shivoham* (i.e. the person who considers himself to be Shiv) in the world? Those who call themselves *Shivoham* in the path of *bhakti* (devotion) are not so big *Shivohams*, but the one is a bigger *Shivoham* as compared to them, who lays the foundation of *Shivoham* is Brahma himself. Even now he is the one (who considers himself to be *Shivoham*). Although he has left his body, he enters in another body which is an instrument and plays his part. Brahma left his male body; that (male form) is not worshipped. When is he worshipped? He is worshipped when he enters in a female body. So, whichever female body he enters and plays the part of *Jagdamba*; call him Brahma, or *Jagdamba*, it is one and the same. Through that body, whom does he consider as the God of the Gita?

**Student:** Himself.

बाबा— तो साबित हो गया कि ज्ञान की आँख नहीं है। भगवान आवेगा तो कुछ करके जावेगा या ऐसे ही वापस चला जावेगा? कुछ करके गया है प्रैक्टिकल में तब संसार भगवान को मानता है और ऐसा कुछ काम करके गया है जो दुनियाँ के कोई भी धर्म पिताओं ने नहीं किया। नई दुनियाँ कोई ने नहीं बनाई। दुनियाँ की मरम्मत तो की है टाईम टु टाईम; लेकिन मरम्मत कितने दिन चलेगी? थोड़े टाईम जो भी धर्म आया सात्विक रहता है। जल्दी ही तमोप्रधान बन जाता

है। 2500 वर्ष के लिए सृष्टिचक्र में आधा समय के लिए नई दुनियाँ कोई ने नहीं बनाई। बाप आकरके नई दुनियाँ बनाते हैं।

**Baba:** So, it is proved that he does not have the eye of knowledge. When God comes, will He go after doing something or will he go back without doing anything? He has done something in practical before going; only then does the world accept God and He has performed such a task and gone that no other religious father of the world has performed. Nobody created a new world. They did repair the world from time to time, but, how many days will the repairing last? Whichever religion comes, it remains true (*satvik*) for some time. It becomes *tamopradhan* (dominated by the quality of darkness or ignorance) soon. Nobody created a new world for half the period of the world cycle, for 2500 years. The Father comes and creates the new world.

समय – 13.15

जिज्ञासू – बाबा, ये रूद्रमाला जब विजयमाला में एड होती है। उसके बाद शरीर रिज्युविनेट होते हैं या पहले रिज्युविनेट होकर फिर एड होते हैं?

बाबा – रिज्युविनेट माना?

जिज्ञासू – कंचन काया।

बाबा– कंचन काया, माला प्रत्यक्ष होने के बाद बनेगी या पहले बन जाएगी? रूद्रमाला के मणके प्रत्यक्ष होने से पहले ही कंचन काया बन जाएगी?

जिज्ञासू – नहीं बाबा, बाद में बनेगी।

बाबा– और पहले सिर्फ रूद्रमाला ही बनेगी या विजयमाला प्रत्यक्ष होगी?

जिज्ञासू – विजयमाला ही प्रत्यक्ष होगी।

**Time: 13.15**

**Student:** Baba, do the bodies rejuvenate after this *Rudramala* (the rosary of *Rudra*) is added to the *Vijaymala* (the rosary of victory), or are they added after being rejuvenated?

**Baba:** What does rejuvenate mean?

**Student:** *Kanchankaya* (the golden body).

**Baba:** Will *kanchankaya* be made after the revelation of the rosary or before it? Will the *kanchankaya* be made before the revelation of the beads of *Rudramala*?

**Student:** No Baba, it will be prepared later on.

**Baba:** And will only the *Rudramala* become ready first of all or will the *Vijaymala* be revealed first?

**Student:** The *Vijaymala* will be revealed [first] indeed.

बाबा – तब शरीरों का, पांच तत्वों का कन्वर्शन होगा? पहले आत्मा का कन्वर्शन होगा, आत्मा रिज्युविनेट होगी या पहले शरीर रिज्युविनेट होंगे?

जिज्ञासू – आत्मा।

बाबा – आत्मा, और आत्मा तब तक रिज्युविनेट नहीं हो सकती जब तक प्रवृत्ति मार्ग की पक्की न बने। रूद्रमाला के मणके अपने में पक्के हैं या कच्चे हैं?

जिज्ञासू – कच्चे हैं।

बाबा – तब तक कच्चे हैं जब तक उनको उनके समान पुरुषार्थी न मिले और जब समान पुरुषार्थी मिल जावेगा तो रूद्रमाला के मणके विजयमाला में एड हो जावेंगे। तो एड हो जावेंगे तो भी नहीं कहेंगे; क्योंकि जम दे जाम दे नहीं होता है। आत्मा को अपवित्र से पवित्र बनने में, पतित आत्मा से पावन बनने में कितना टाईम लगा? अभी कितने साल हो गए?

जिज्ञासू – 70 साल।

**Baba:** Will the conversion of the bodies, of the five elements take place at that time? Will conversion of the soul take place first, will the soul rejuvenate first or will the bodies rejuvenate first?

**Student:** The soul.

**Baba:** The soul. And the soul cannot rejuvenate until it becomes firm in the path of household (*pravritti marg*). Are the beads of the rosary of *Rudra* firm or weak?

**Student:** They are weak.

**Baba:** They are weak as long as they do not find an equal *purushartha* (maker of special effort for the soul) and when they find an equal *purushartha*, the beads of *Rudramala* will be added to the *Vijaymala*. Even when they are added (to *vijaymala*), it is not that the bodies will rejuvenate; because it cannot happen at once. How much time did the soul take to transform from an impure soul to a pure soul, from a sinful soul to a pure soul? How many years have passed now?

**Student:** 70 years.

बाबा – 70 साल। अभी तो रूद्रमाला भी पूरी प्रत्यक्ष नहीं हुई है। अभी तो आठ का ही नम्बर लग रहा है, शुरू हो रहा है। आठ प्रत्यक्ष हो जावेंगे, तब कहा जावेगा टू लेट का बोर्ड लग गया। अभी लेट का बोर्ड लगा है। टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है। इसका मतलब अभी आत्माएँ भी सम्पन्न नहीं बनी हैं। तो 70 साल पूरे हो गए अभी आत्माएँ भी सम्पन्न नहीं बनी हैं। तो पाँच प्रकृति के तत्व जो जड़ तत्व होते हैं। जिनमें समझ ही नहीं है। पाँच तत्व कहे जाते हैं ना। क्या नाम है उनका? पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश। वो भी चैतन्य रूप में होंगे, उनके भी जो मूल हैं साकार में होंगे या सिर्फ जड़ होंगे? अरे! कोई पृथ्वी के रूप में पार्ट बजाने वाली पृथ्वी माता साकार में होगी या सिर्फ ऐसे ही? साकार में होगी। तो वो जड़त्वमई बुद्धि वाली होगी या चैतन्य बुद्धि होगी बाप को पहचानने वाली?

जिज्ञासू – साकार में होगी तो चैतन्य होगी।

**Baba:** 70 years. Now even the *Rudramala* has not revealed completely. Now it is just the eight who are beginning to reach their number (i.e. rank). When the eight are revealed, then it will be said that the board of 'too late' has been displayed. Now the board of 'late' has been displayed. The board of 'too late' has not been displayed. It means that even the souls have not become perfect now. So, although 70 years have passed, the souls have not become perfect yet. The five elements of nature, which are non-living, which do not have any knowledge at all, are called the five elements, aren't they? What are their names? Earth, water, air, fire and sky. Will they too be in a living form? Will their origins also be in a corporeal form or just in a non-living form? Arey! Will there be a mother Earth who plays the part of Earth in a corporeal form or is it just for name sake? She will be in a corporeal form. So, will she have an inert intellect or a living intellect which recognizes the Father?

**Student:** If she is in a corporeal form she will be living.

बाबा – चैतन्य बुद्धि होगी? बाप को पहचानने वाली? पहले प्रकृति के पाँच तत्व बाप को पहचानेंगे जो रावण के सिर दिखाए जाते हैं। रावण के पाँच सिर माया के रूप दिखाए जाते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। फिर पाँच सिर प्रकृति के पाँच तत्व दिखाए जाते हैं। दस सिर दिखाए जाते हैं ना। तो वो दस सिर बाप को पहले पहचानते हैं या जड़त्वमई बुद्धि वाले? रावण के सिरों को क्या कहेंगे? बाप को पहचानने वाली बुद्धि है या बाप को तिरस्कार करने वाली और न पहचानने वाली बुद्धि है? बाप को न पहचानने वाली अथवा तिरस्कार करने वाली बुद्धि है; इसलिए बोला मुरली में – मेरे साथ रहने वाले मेरे को नहीं पहचान पाते। पाँच तत्वों में मुख्य तत्व कौनसा है? पृथ्वी। पृथ्वी ऐसा तत्व है जिस पृथ्वी तत्व पर सारी दुनियाँ का आधार है। जो भी चैतन्य है जीव-जंतु वो कहाँ रहते हैं? पृथ्वी पर रहते हैं और कोई दूसरे ग्रह-उपग्रह में तो जीव-जंतु रहते ही नहीं। चैतन्यता जो है वो सिर्फ पृथ्वी पर है और पृथ्वी पर भी उत्तरीध्रुव और दक्षिणीध्रुव। नॉर्थपोल, साऊथपोल ऐसी जगह है जहाँ सूर्य की किरणें, ज्ञान की किरणें तिरछी पड़ती हैं; क्योंकि बहुत दूर है। तो वहाँ भी कोई जीव-जंतु..... जिज्ञासू – नहीं रहते।

**Baba:** Will she have a living intellect that recognizes the Father? Will the five elements of the nature which are depicted as the heads of Ravan recognize the Father first? The five heads of Ravan are depicted in the form of *Maya*. Lust, anger, greed, attachment and ego. Then the five elements of nature are depicted as the (remaining) five heads. Ten heads are depicted, aren't they? So, do those ten heads recognize the Father first or do those who have an inert intellect recognize the Father first? What will the heads of Ravan be called? Do they possess an intellect that recognizes the Father or do they possess an intellect that censures and does not recognize the Father? They have an intellect that doesn't recognize the Father or scorns at Him. That is why it has been said in a *Murli*, those who live with me cannot recognize me. Which is the main element among the five elements? The Earth. The Earth is such an element, on which the entire world is based. Where do all the living beings live? They live on the Earth. Living organisms do not exist on any other planet or satellite at all. Life exists only on the Earth. And even on the Earth the North Pole and the South Pole are such places where the rays of the Sun, the rays of (Sun of) knowledge fall in an inclined way because they (North Pole and the South Pole) are situated very far away. So, there, no living beings .....

**Student:** ..... exist there.

बाबा – जहाँ सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं वहीं जीव-जंतु ज्यादा हैं। विषुवत रेखा के आस-पास कर्क रेखा, मकर रेखा के आस-पास तक जहाँ सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं माना ज्ञान सूर्य का डायरेक्ट प्रकाश जहाँ-जहाँ मिलता है वहीं चैतन्यता है। तो, पाँच तत्व पहले सम्पन्न बनेंगे या आत्माएँ पहले सम्पन्न बनेंगी मन-बुद्धिरूपी? मन-बुद्धिरूपी आत्माओं को सम्पन्न बनने के लिए इतना टाइम है, सौ वर्ष का संगमयुग। पतित दुनियाँ में एक भी पावन नहीं होगा और पावन दुनियाँ में एक भी पतित नहीं होगा। जहाँ दुनियाँ का बड़ा हिस्सा पतितों का है। वहाँ पावन का संगठन कैसे प्रत्यक्ष होगा? इसलिए जब तक दुनियाँ में पाप आत्माओं की संख्या ज्यादा है, तो वायब्रेशन पाप के ज्यादा बनेंगे या पुण्य के ज्यादा वायब्रेशन बनेंगे?

जिज्ञासू – पाप के।

बाबा – कब तक बनते रहेंगे?

जिज्ञासू – जब तक विनाश नहीं होगा।

बाबा – नहीं, पुण्य के वायब्रेशन बन ही नहीं सकते; क्योंकि इनकी संख्या ही मुट्ठी भर है। सतयुग की नई दुनियाँ की शुरुवात करने वाली टोटल आत्माएँ कितनी हैं?

जिज्ञासू – 9 लाख 16 हजार।

बाबा- नहीं।

जिज्ञासू- साढ़े चार लाख।

**Baba:** There are more living beings only wherever the rays of the Sun fall directly. There is life (*chaitanyata*) only at the places around the equator, around the tropic of Cancer (*kark-rekha*) and the tropic of Capricorn (*makar-rekha*), where the Sun rays fall directly, i.e. the places which receive the direct light of the Sun of knowledge. So, will the five elements become perfect first or will the mind & intellect-like souls become perfect first? The time of hundred-years of the Confluence Age is for the mind & intellect-like souls to become perfect. There will not be even a single pure soul in the sinful world and there will not be a single sinful soul in the pure world. How will the gathering of pure souls be revealed in the world where the major portion consists of sinful souls? That is why, until the number of sinful souls is more in the world, will there be more vibrations of sins or more vibrations of charity (*punya*)?

**Student:** Of sins.

**Baba:** Until when will they continue to be formed?

**Student:** Until destruction takes place.

**Baba:** No, the vibrations of charity cannot be created at all because their (pure souls') number is just handful. What is the total number of souls who commence the new world of the Golden Age?

**Student:** 9 lakh, 16 thousand.

**Baba:** No.

**Student:** Four and a half lakhs (450 thousand).

बाबा— नौ लाख तो 2036 में भी नहीं होंगे। 2036 में भी नौ लाख आबादी नहीं होगी। राधा—कृष्ण का जन्म होने के बाद। राधा कृष्ण जैसे जन्म लेने वाले बच्चों की संख्या साढ़े चार लाख हो जाए और जन्म देने वालों की संख्या साढ़े चार लाख हो जाए। तो सतयुग के पहले जन्म के बाद जब राधा—कृष्ण जैसे दूसरे नम्बर के बच्चे पैदा हो माना दूसरा नारायण तब कहेंगे। इसका मतलब ये हुआ कि जब तक पाप आत्माओं की दुनियाँ पूरी खलास नहीं होती है तब तक नई दुनियाँ का वायब्रेशन अच्छा नहीं बन सकता और वायब्रेशन जब तक अच्छा नहीं बनेगा श्रेष्ठ आत्माओं का तब तक वायब्रेशन के आधार पर पाँच तत्व भी पावन नहीं बन सकते।

**Baba:** Nine lakh (population) will not exist even in 2036. The population will not be nine lakh even in , after the birth of Radha and Krishna. The number of children who take birth like Radha and Krishna should reach four and a half lakh and the number of those who give birth should also reach four and a half lakh. So, after the first birth of the Golden Age, when the children like Radha and Krishna belonging to the second category (generation) take birth, i.e. when the second Narayan takes birth, then it will be said (to have reached nine lakhs). It means that until the entire world of the sinful souls perishes completely, the vibrations of the new world cannot become nice and until the vibrations of the righteous souls becomes nice, the five elements too cannot become pure on the basis of the vibrations.

समय — 40.40

जिज्ञासू — बाबा, एक माताजी को लेटर में आया बाबा से कि मुरली किसको पसंद होती है और अव्यक्त वाणी किसको? तो उसमें आन्सर (जवाब) आया कि जो दैवी गुण वाले होते हैं उनको अव्यक्त वाणी पसंद होगी। जो.....

बाबा — जो दैवी गुण वाले नहीं होते हैं। जिनके अंदर दैवी गुणों की धारणा नहीं है उतनी उनको अव्यक्त वाणी अच्छी लगेगी और मुरली उनको अच्छी लगेगी जो ज्ञानी तू आत्मा है; लेकिन धारणा नहीं है।

**Time:** 40.40

**Student:** Baba, a mother received a letter from Baba regarding her question as to who like *Murlis* and who like *Avyakta Vanis*? So, an answer was received in that, those who have divine virtues like *Avyakta Vanis*. Those...

**Baba:** Those who do not have divine virtues, those who do not inculcate divine virtues will like *Avyakta Vani* more and those who are knowledgeable souls, but do not have inculcation (of virtues) will like *Murlis*.

.....  
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.